12.4

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तुतिमणिमाला

प्रथमोभागः

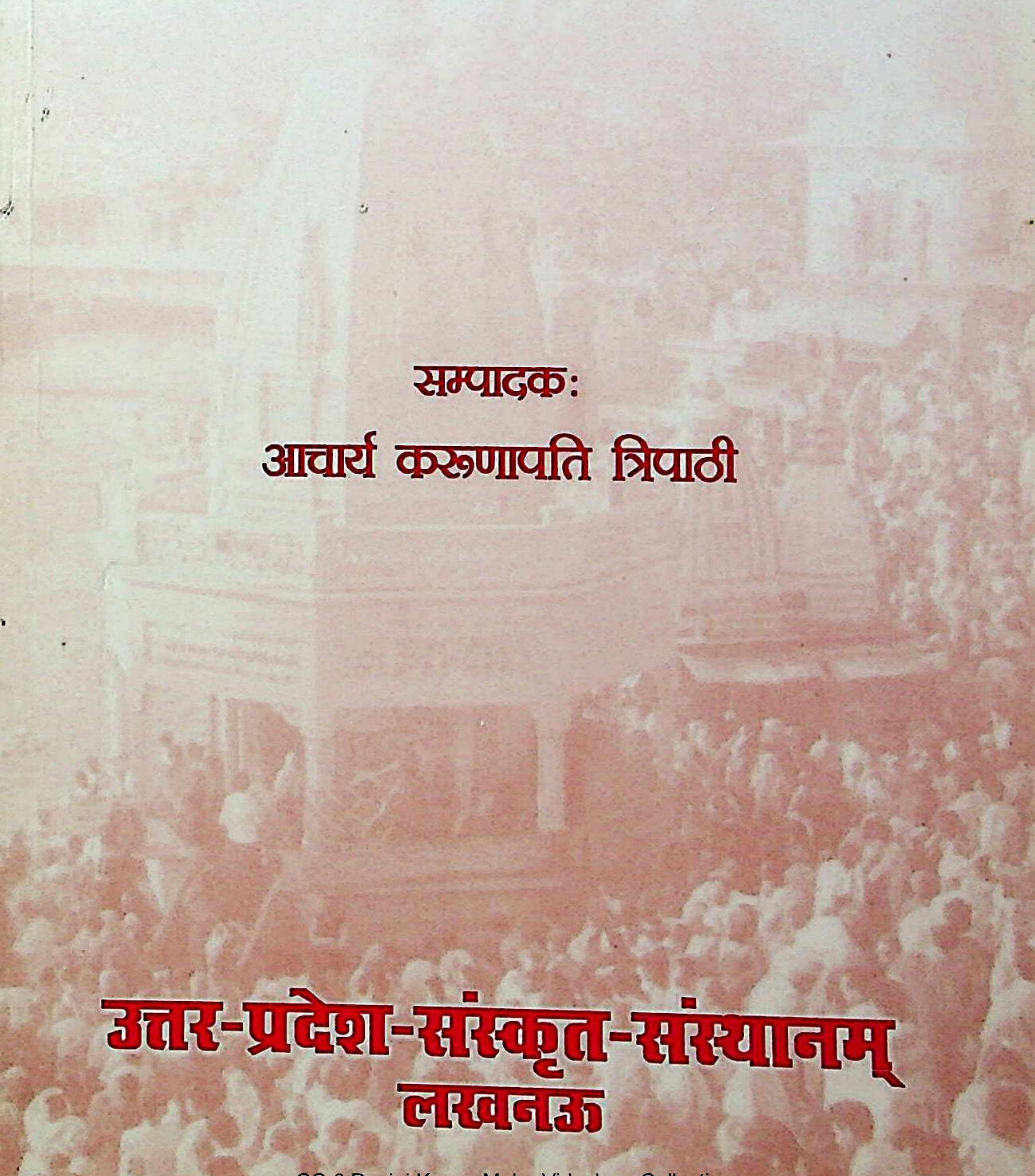

सम्पादकः

आचार्य करुणापति त्रिपाठी

उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्

लखनऊ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथी
पु.सं.० 2881
पुस्तकालय

स्तुतिमणिमाला

प्रथमभागः

सम्पादकः
आचार्यकरुणापतित्रिपाठी

उत्तरप्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
लखनऊ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकः स्वत्वाधिकारी च–
डॉ सच्चिदानन्दपाठकः
निदेशकः
उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्-लखनऊ

प्राप्तिस्थानम्-
विक्रयविभागः
उत्तर-प्रदेश-संस्कृत-संस्थानम्
नया हैदराबाद, लखनऊ - २२६ ००७
फोन : २७८०२५१ फैक्स - २७८१३५२
ई-मेल : nideshak@upsanskritsansthanam.org

प्रथमं : संस्करणम् -३०००
द्वितीय संस्करणम्-२०००
मूल्यम् : २०.०० रुप्यकाणि
वि.सं. २०५६, (२००३ ई.)

मुद्रकः-
शिवम् आर्टस्, २११, पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ
फोन : २७८२१७२, २७८२३४८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पु०सं० 2831 पुस्तकालय

प्रकाशकीय

भारतीय जीवनपद्धति में जहाँ जीवन-विधा ही उपासना है वहीं स्तुतियां दैनन्दिनचर्या की अभिन्न अंग रही हैं। स्तुतियां वस्तुतः दैवी सत्ता एवं उसके विविध रूपों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन तथा दैवी शक्तियों के प्रति भावनाओं के उदात्तीकरण का उन्मुखी क्रियात्मक मार्ग हैं। इसीलिए प्रत्येक परम्परागत भारतीय का जीवन स्तुतियों एवं स्तोत्रों से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की ओर से स्तुतिमणिमाला के नाम से लोकप्रचलित स्तुतियों एवं स्तोत्रों का एक क्रमबद्ध संकलन दो भागों में प्रकाशित किया गया है, जिसे जन सामान्य ने बड़े ही उत्साह के साथ अपनाया है। वस्तुतः भारतीय जीवन पद्धति में प्रचलित यज्ञ और उपासना के विविध जटिल रूप अपनी विधि के निषेध परक व्यस्तताओं के कारण उतने लोकप्रिय नहीं हो सके हैं जितने कि सामान्य स्तोत्र एवं स्तुतियां।

कलयुग में नामस्मरण की महिमा भी जन सामान्य में इसी सर्वजन ग्राह्य तथा सहजता को दृष्टि में रखते हुए प्रतिपादित की गयी है। वस्तुतः लोकाराधन में लगे व्यक्ति के लिए ध्यान-साधना तथा उपासना के प्रति अपेक्षित मनोयोग तथा समय के अभाव में कठिनाई होती है, जबकि देवों के प्रति उसका भक्तिभाव सहज ही स्तुति तथा कीर्तन के माध्यम से व्यक्त हो जाता है। एक सामान्य व्यक्ति भी सहज ही लोकप्रिय स्तुतियों के माध्यम से बिना किसी अनौपचारिक साधना या ध्यान पद्धति के सीधे संबन्धित दैवी-शक्ति से ऐसी स्तुति पाठ या गायन के साथ ही जुड़ जाता है।

स्तुतिमणिमाला का प्रथम भाग अपनी इसी लोकप्रियता के परिणामस्वरूप अप्राप्य हो गया था और इसकी अत्यधिक मांग को देखते हुये उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। प्रथम भाग के पुनर्मुद्रण के लिये संस्थान के परम सम्माननीय अध्यक्ष डॉ. नागेन्द्र पाण्डेय तथा सम्मानित सदस्यों की प्रेरणा पाथेय बनी है। इसके आकार प्रकार में पुनर्मुद्रण के उपरान्त जो संशोधन किया गया है उसके लिये सहायक निदेशक डॉ. चन्द्रकान्त द्विवेदी तथा अन्य सहयोगियों का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने इसे मुद्रणालय शिवम् आर्ट्स से सम्पर्क कर इसे नये रूप में लाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

आशा है कि स्तुतियों की यह मणिमाला समाराधित समस्त दैवी शक्तियों के प्रसाद के रूप में सभी भक्त जनों के लिये न केवल स्वीकार्य होगी, अपितु शिरोधार्य भी होगी।

महाशिवरात्रि
संवत २०५६

डॉ. सच्चिदानन्द पाठक
निदेशक।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

मेरी परमपूज्या माता जी स्वनामधन्य स्व. महामहोपाध्याय पण्डित श्रीशिवकुमार शास्त्री जी की पुत्री थीं। मैं बचपन से ही उन्हें घण्टों पूजा स्तोत्र-पाठ आदि करते देखा करता था। मेरे पिताजी भी घण्टों त्रिकाल सन्ध्या-पूजन, स्तोत्रादि का पाठ करते रहते थे। इसी कारण बचपन से ही स्तोत्र-स्तुतियों का संस्कार पड़ा। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ की वर्तमान अध्यक्षताकाल में मैंने एक लघु स्तोत्र संग्रह प्रकाशित और वितरित करने का प्रस्ताव संस्थान की कार्य समिति की बैठक में रखा, जिसका सभी सदस्यों ने हार्दिक समर्थन किया। इसी का परिणाम यह लघुग्रन्थ-"स्तुतिमणिमाला" आपके सम्मुख है।

कलिकाल में-

कलियुग के बल हरिगुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ।
कलियुग जोग न जग्य न ग्याना। एक आधार राम गुन गाना।।

कलियुग में देवाराधन, स्तोत्र-स्तुति-पाठ, आराध्यवन्दन, कीर्तन और भजन से यह लोक बनता है, और परलोक तथा परमपद भी धर्मप्राण जनता प्राप्त कर सकती है। नाना लौकिक प्रपञ्च-ग्रस्त रहकर भी सदाचारी भजन कीर्तनादि कर सकता है। सांसारिक पीड़ा से आर्तापन्न-विपन्न जन त्राण पा सकता है। अतः यह संग्रह भगवान् और सदाचारी भक्तों को संस्थान की ओर से समर्पित हैं।

इसमें जिन जिन लोगों से सहायता मिली है उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ। विशेषतः श्रीदक्षिणामूर्तिमठ, काशी के आचार्य स्वामी शारदानन्द जी को उनकी आद्यन्त सहायता के लिए हार्दिक आशीर्वाद और धन्यवाद है। डा. चन्द्रकान्त द्विवेदी को भी आशीर्वाद जिनके अहर्निश परिश्रम से ही इस लघु ग्रन्थ का प्रकाशन सम्पन्न हुआ है। समयाभाव से स्तुतिमणिमाला को विशदरूप नहीं दे सका हूँ भविष्य में इसकी पूर्ति की जायेगी।

श्रा. कृ. शीतलाष्टमी
वि. २०४०

करुणापतित्रिपाठी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथी ______ पु०सं० ______ 288 ! भारती पुस्तकालय

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषयः	पृष्ठाः
१.	प्रकीर्णस्तुतिश्लोकाः	
	गणेशस्तुतिः	१
	महाकालिकास्तुतिः	२
	महालक्ष्मीस्तुतिः	२
	महासरस्वतीस्तुतिः	२
	दुर्गास्तुतिः	२
	सरस्वतीस्तुतिः	३
	विष्णुस्तुतिः	३
	दशावतारस्तोत्रम्	३
	कृष्णस्तुतिः	४
	शिवस्तुतिः	४
२.	गणेशस्तुतयः	
	सङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्	५
	गणेशाष्टकम्	५
३.	विष्णुस्तुतयः	
	अच्युताष्टकम्	७
	षट्पदी	८
	गोविन्दाष्टकम्	८
	श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्	१०
	आर्तत्राणनारायणाष्टादशकम्	२०
	विष्णुस्तुतिविषयक–स्फुटश्लोकाः	२२
४.	शिवस्तुतयः	
	विश्वनाथाष्टकम्	२३
	श्रीशिवताण्डवस्तोत्रम्	२४
	श्रीरुद्राष्टकम्	२६
	शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	२८
	पशुपत्यष्टकम्	२८
	शिवाष्टकम्	२६
	श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्	३०
५.	सूर्यस्तुतयः	
	सूर्यस्तवराजः	३६
	सूर्याष्टकम्	३७
	सूर्यमण्डलाष्टकम्	३८
	सूर्यस्तोत्रम्	३६
	आदित्यहृदयस्तोत्रम्	४०
६.	देवीस्तुतयः	
	देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्	४२
	आनन्दलहरी	४४
	सप्तश्लोकी दुर्गा	४७
	भवान्यष्टकम्	४७
	श्रीभगवतीस्तोत्रम्	४८
	अन्नपूर्णास्तोत्रम्	४६
	सरस्वतीस्तोत्रम्	५०
	शारदाभुजङ्गस्तोत्रम्	५१
	महालक्ष्म्यष्टकम्	५२
	सङ्कटास्तुतिः	५३
	त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्	५६
७.	प्रकीर्णस्तुतयः	
	कालभैरवाष्टकम्	५७
	श्रीबटुकभैरवस्तुतिः	५६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्र.सं.	विषयः	पृष्ठाः
	हनुमत्स्तुतयः	६१
	दशावतारस्तोत्रम्	६३
	रामस्तोत्रम्	६३
	रामरक्षास्तोत्रम्	६४
	मधुराष्टकम्	६७
	कृष्णस्तोत्रम्	६८
	श्रीकृष्णाष्टकम्	६६
	गङ्गाष्टकम्	७०
	गङ्गाष्टकम्	७१
	यमुनाष्टकम्	७३
	एकश्लोकी-रामायणम्	७४
	एकश्लोकी-भागवतम्	७४
	एकश्लोकी-महाभारतम्	७४
	चतुःश्लोकी भागवतम्	७४
	अष्टादशश्लोकी गीता	७५
	तीर्थस्तुतिः	७६
	नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्	७७
	ग्रहस्तुतिः	७८
	नवग्रहस्तोत्रम्	७८
	गुरुस्तुतिः	७६
	शिवमानसपूजास्तोत्रम्	७६
	दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्	८०
	महागणेशपञ्चरत्नम्	८१
	मङ्गलश्लोकाः	८२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

प्रकीर्णस्तुतिश्लोकाः

गणेशस्तुतिः

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ।।१।।
स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम् ।।२।।
वर्णानामर्थसङ्घानां रसानां छन्दसामपि ।
मङ्गलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ।।३।।
विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ ! नमो नमस्ते ।।४।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्तप्रसन्न-वरदाय नमो नमस्ते ।।५।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ।।६।।
विश्वरूप - स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं नमो नमः ।।७।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।८।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति,
भक्तिप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति,
तेभ्यो गणेश ! वरदो भव नित्यमेव ।।९।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकालिकास्तुतिः

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशण्डीं शिरः
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौ त्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।१।।

महालक्ष्मीस्तुतिः

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां,
तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम् ।
बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधाना-
माद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्गसंस्थाम् ।।१।।

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकामप्रदायिनि ।
सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तु ते ।।२।।

अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ।।३।।

महासरस्वतीस्तुतिः

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ।।१।।

दुर्गास्तुतिः

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं,
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ।।१।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वतीस्तुतिः

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।१।।
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।२।।

विष्णुस्तुतिः

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्वलोकैकनाथम् ।।१।।
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो,
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः,
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ।।२।।
यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
र्वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो,
यस्याऽन्तं न विदुः सुराऽसुरगणाः देवाय तस्मै नमः ।।३।।
नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ।।४।।

दशावतारस्तोत्रम्

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूलोकमुद्बिभ्रते,
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते,
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णस्तुतिः

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च।
नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः।।
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।।

शिवस्तुतिः

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ।।१।।
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमपि वरं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टां डमरुसहितं चाङ्कुशं वामभागे,
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ।।२।।
चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे,
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे ।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे,
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ।।३।।
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भोस्तवाराधनम् ।।४।।
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ।।५।।
नमः शिवाय शान्ताय पापसंहरणाय च ।
विश्वेश्वराय देवाय पार्वतीपतये नमः ।।६।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा,
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।७।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। श्री गणेशाय नमः ।।

गणेशस्तुतयः

सङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ।।१।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।२।।
लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।।३।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।।४।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ।।५।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।६।।
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।।७।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।।८।।

–श्रीनारदपुराणे सङ्कष्टनाशनगणेशस्तोत्रम् ।

गणेशाष्टकम्

सर्वे ऊचुः

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते ।
यतो भाति सर्वं त्रिधाभेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ।।१।।
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्तथाब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
तथेन्द्रादयो देवसङ्घा मनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ।।२।।
यतो वह्निभानू भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः ।
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्षसङ्घाः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ।।३।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घा यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च ।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥४॥
यतो वृद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्तिसन्तोषिकाः स्युः ।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥५॥
यतः पुत्रसम्पद्यतो वाञ्छितार्थो यतोऽभक्तविघ्नास्तथानेकरूपाः ।
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥६॥
यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः ।
यतोऽनैकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥७॥
यतो वेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति ।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥८॥

श्रीगणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः ।
त्रिसन्ध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति ॥९॥
यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम् ।
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥१०॥
यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने ।
स मोचयेद्बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥११॥
विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् ।
वाञ्छिताँल्लभते सर्वानेकविंशतिवारतः ॥१२॥
यो जपेत्परया भक्त्या गजाननपरो नरः ।
एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥१३॥

इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्रीगणेशाष्टकं सम्पूर्णम्।

●

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष्णुस्तुतयः

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं,
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् ।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं,
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥१॥
अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं,
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् ।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं,
देवकीनन्दनं नन्दजं सन्दधे ॥२॥
विष्णवे जिष्णवे शङ्खिने चक्रिणे,
रुक्मिणीरागिणे जानकी जानये ।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने,
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥३॥
कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण,
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे ।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज,
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥४॥
राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो,
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः ।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽ-
गस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम् ॥५॥
धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्द्वेषिणां,
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः ।
पूतनाकोपनः सूरजाखेलनो,
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥६॥
विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं,
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् ।
वन्यया मालया शोभितोरःस्थलं,
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे ॥७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं,
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः ।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं,
किङ्किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥८॥
अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं,
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् ।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भरं,
तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥९॥

– श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचितम् ।

षट्पदी

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम् ।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः ॥१॥
दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोग-सच्चिदानन्दे ।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥२॥
सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम् ।
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन समुद्रो न तारङ्गः ॥३॥
उद्धृतनग नगाभिदनुज दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे ।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ॥४॥
मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवतावता सदा वसुधाम् ।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ॥५॥
दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द ।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥६॥
नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥७॥

– श्रीमदाद्यशङ्कराचार्यविरचिता ।

गोविन्दाष्टकम्

चिदानन्दाकारं श्रुतिसरससारं समरसं,
निराधाराधारं भवजलधिपारं परगुणम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

रमाग्रीवाहारं व्रजवनविहारं हरनुतं,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।१।।

महाम्भोधिस्थानं स्थिरचरनिदानं दिविजपं,

सुधाधारापानं विहगपतियानं यमतरम् ।

मनोज्ञं सुज्ञानं मुनिजननिधानं ध्रुवपदं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।२।।

धिया धीरैर्ध्येयं श्रवणपुटपेयं यतिवरै-

र्महावाक्यैर्ज्ञेयं त्रिभुवनविधेयं विधिपरम् ।

मनोमानामेयं सपदि हृदि नेयं नवतनुं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।३।।

महामायाजालं विमलवनमालं मलहरं,

सुभालं गोपालं निहतशिशुपालं शशिमुखम् ।

गलातीतं कालं गतिहयमरालं मुररिपुं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।४।।

नभोबिम्बस्फीतं निगमगणगीतं समगतिं,

सुरौघे सम्प्रीतं दितिजविपरीतं पुरिशयम् ।

गिरां पन्थातीतं स्वदितनवनीतं नयकरं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।५।।

परेशं पद्मेशं शिवकमलजेशं शिवकरं,

द्विजेशं देवेशं तनुकुटिलकेशं कलिहरम् ।

खगेशं नागेशं निखिलभुवनेशं नगधरं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।६।।

रमाकान्तं कान्तं भवभयभयान्तं भवसुखं,

दुराशान्तं शान्तं निखिलहृदि भान्तं भुवनपम् ।

विवादान्तं दान्तं दनुजनिचयान्तं सुचरितं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।७।।

जगज्ज्येष्ठं श्रेष्ठं सुरपतिकनिष्ठं क्रतुपतिं,

बलिष्ठं भूयिष्ठं त्रिभुवनवरिष्ठं वरवहम् ।

स्वनिष्ठं धर्मिष्ठं गुरुगणगरिष्ठं गुरुवरं,

सदा तं गोविन्दं परमसुखकन्दं भजत रे ।।८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदापाणेरेतद् दुरितदलनं दुःखशमनं,
विशुद्धात्मा स्तोत्रं पठति मनुजो यस्तु सततम्।
स भुक्त्वा भोगौघं चिरमिह ततोऽपास्तवृजिनो,
वरं विष्णोः स्थानं व्रजति खलु वैकुण्ठभुवनम्।।९।।

इति श्रीमत्परमहंसस्वामिब्रह्मानन्दविरचितं गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्

।।श्रीपरमात्मने नमः।।

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ।।
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ।।१।।

युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ।।२।।
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ।।३।।

भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ।।४।।
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ।।५।।
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ।।६।।
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महाभूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ।।७।।
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ।।८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥९॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१०॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥११॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥१२॥
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१३॥
विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१४॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥१५॥
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः ॥१६॥
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥१७॥
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥१८॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥१९॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥२०॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥२१॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥२२॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥२३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ।।२४।।
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ।।२५।।
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वतस्थाणुर्वरारोहोमहातपाः ।।२६।।
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ।।२७।।
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ।।२८।
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ।।२९।।
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ।।३०।।
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ।।३१।।
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ।।३२।।
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ।।३३।।
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ।।३४।।
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमांस्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ।।३५।।
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ।।३६।।
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ।।३७।।
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृत्तः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ।।३८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ।।३९।।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ।।४०।।
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ।।४१।।
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ।।४२।।
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ।।४३।।
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ।।४४।।
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ।।४५।।
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ।।४६।।
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ।।४७।।
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ।।४८।।
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ।।४९।।
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ।।५०।।
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ।।५१।।
अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः ।।५२।।
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ।।५३।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ।।५४।।
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ।।५५।।
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ।।५६।।
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ।।५७।।
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्र संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ।।५८।।
विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ।।५९।।
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ।।६०।।
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ।।६१।।
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ।।६२।।
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ।।६३।।
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ।।६४।।
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ।।६५।।
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ।।६६।।
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः ।।६७।।
जीवो विनयिता साक्षी कुमुदोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ।।६८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजो महार्हः स्वभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥६९॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रृङ्गः कृतान्तकृत् ॥७०॥
महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥७१॥
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥७२॥
भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥७३॥
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥७४॥
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥७५॥
शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥७६॥
अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥७७॥
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमांल्लोकत्रयाश्रयः ॥७८॥
स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥७९॥
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥८०॥
अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥८१॥
कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥८२॥
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥८३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ।।८४।।
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ।।८५।।
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ।।८६।।
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ।।८७।।
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ।।८८।।
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ।।८९।।
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ।।९०।।
एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ।।९१।।
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ।।९२।।
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ।।९३।।
तेजो वृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ।।९४।।
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ।।९५।।
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ।।९६।।
शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ।।९७।।
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ।।९८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible]दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥९९॥
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृतांशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥१००॥
सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥१०१॥
सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥१०२॥
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः ॥१०३॥
भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥१०४॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः ॥१०५॥
सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥१०६॥
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥१०७॥
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥१०८॥
सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥१०९॥
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥११०॥
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥१११॥
उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तोः जीवनः पर्यवस्थितः ॥११२॥
अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥११३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जन्मजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥११४॥
आधारनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥११५॥
प्रमाणं प्राणनिलयःप्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥११६॥
भूर्भुवस्स्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥११७॥
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥११८॥
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥११९॥
शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१२०॥

॥ सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१२१॥
य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्कश्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥१२२॥
वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥१२३॥
धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥१२४॥
भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥१२५॥
यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥१२६॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥१२७॥
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥१२८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ।।१२९।।
वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ।।१३०।।
न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ।।१३१।।
इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ।।१३२।।
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ।।१३३।।
द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ।।१३४।।
ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ।।१३५।।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ।।१३६।।
सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ।।१३७।।
ऋषयःपितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ।।१३८।।
योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ।।१३९।।
एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोका न्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ।।१४०।।
इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ।।१४१।।
विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ।।१४२।।

ॐ तत्सदिति श्रीमहाभारते शतसाहस्त्रयां संहितायां
वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे
श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्त्रनामस्तोत्रम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्तत्राणनारायणाष्टादशकम्

श्रीगणेशाय नमः

प्रह्लाद प्रभुरस्ति चेत् तव हरिः सर्वत्र मे दर्शय,
स्तम्भे चैनमिति ब्रुवन्तमसुरं तत्राविरासीद्धरिः ।
वक्षस्तस्य विदारयन्निजनखैर्वात्सल्यमावेदय-
न्नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१॥
श्रीरामाय विभीषणोऽयमधुना त्वार्तो भयादागतः,
सुग्रीवानय पालयेऽहमधुना पौलस्त्यमेवागतम् ।
एवं योऽभयमस्य सर्वविदितं लङ्काधिपत्यं ददा-
वार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥२॥
नक्रग्रस्तपदं समुद्यतकरं ब्रह्मेश! देवेश! मां
पाहीति प्रचुरार्तरावकरिणं देवेश शक्तीश च ।
मा शोचेति ररक्ष नक्रवदनाच्चक्रश्रिया तत्क्षणा-
दार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥३॥
हा कृष्णाच्युत हा कृपाजलनिधे हा पाण्डवानां गते,
क्वासि क्वासि सुयोधनादवगतां हा रक्ष मां द्रौपदीम् ।
इत्युक्तोऽक्षयवस्त्ररक्षिततनुं योऽरक्षदापद्गता-
मार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥४॥
यत्पादाब्जनखोदकं त्रिजगतां पापौघविध्वंसनं,
यन्नामामृतपूरणं च पिबतां सन्तापसंहारकम् ।
पाषाणश्च यदङ्घ्रितो निजवधूरूपं मुनेराप्तवा-
नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥५॥
यन्नामश्रुतिमात्रतोऽपरिमितं संसारवारान्निधिं,
त्यक्त्वा गच्छति दुर्जनोऽपि परमं विष्णोः पदं शाश्वतम् ।
तन्नैवाद्भुतकारणस्य त्रिजगतां नाथस्य दासोऽस्म्यह-
मार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥६॥
पित्रा भ्रातरमुत्तमाङ्कगमितं भक्तोत्तमं यो ध्रुवं,
दृष्ट्वा तत्सममारुरुक्षुमुदितं मात्रावमानं गतम् ।
योऽदात् तं शरणागतं तु तपसा हेमाद्रिसिंहासनं
ह्यार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥७॥
नाथेति श्रुतयो न तत्त्वमतयो घोषस्थिता गोपिका
जारिण्यः कुलजातिधर्मविमुखा अध्यात्मभावं ययुः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भक्तिर्यस्य ददाति मुक्तिमतुलां जारस्य यः सद्गतिः
स्यार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥८॥
क्षुत्तृष्णार्तसहस्रशिष्यसहितं दुर्वाससं क्षोभितं,
द्रौपद्या भयभक्तियुक्तमनसा साकं स्वहस्तार्पितम् ।
भुक्त्वाऽतर्पयदात्मवृत्तिमखिलामावेदयन् यः पुमा-
न्नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥९॥
येनारक्षि रघूत्तमेन जलधेस्तीरे दशास्यानुज-
स्त्वायातं शरणं रघूत्तम विभो रक्षातुरं मामिति ।
पौलस्त्येन निराकृतोऽथ सदसि भ्राता च लङ्कापुरे,
ह्यार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१०॥
येनावाहि महाहवे वसुमती संवर्तकाले महा-
लीलाक्रीडवपुर्धरेण हरिणा नारायणेन स्वयम् ।
यः पापिद्रुमसम्प्रवर्तमचिराद् हत्वा च योऽगात्प्रिय-
मार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥११॥
योद्धासौ भुवनत्रये मधुपतिर्भर्ता नराणां कुले,
राधाया अकरोद्रते रतिमनः पूर्तिं सुरेन्द्रानुजः ।
यो वा रक्षति दीनपाण्डुतनयान् नाथेति भीतिं गता-
नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१२॥
यः सान्दीपिनिदेशतश्च तनयं लोकान्तरात् सन्नतं,
चानीय प्रतिपाद्य पुत्रमरणादुज्जृम्भमाणार्तये ।
सन्तोषं जनयन्नमेयमहिमा पुत्रार्थसम्पादना-
दार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१३॥
यन्नामस्मरणादघौघसहितो विप्रः पुराऽजामिलः,
प्राणान्मुक्तिमशेषितामनु च यः पापौघदावार्तियुक् ।
सद्यो भागवतोत्तमात्मनि मतिं प्रापाम्बरीषाभिध-
श्चार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१४॥
योऽरक्षद्वसनादिनित्यरहितं विप्रं कुचैलाभिधं,
दीनादीनचकोरपालनपरः श्रीशङ्खचक्रोज्ज्वलः ।
तज्जीर्णाम्बरमुष्टिमात्रपृथुकानादाय भुक्त्वा क्षणा-
दार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१५॥
यत्कल्याणगुणाभिराममलं मन्त्राणि संशिक्षते,
यत्संशेति पतिप्रतिष्ठितमिदं विश्वं वदत्यागमः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो योगीन्द्रमनः सरोरुहतमः प्रध्वंसविद्भानुमा-
नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१६॥
कालिन्दीह्रदयाभिरामपुलिने पुण्ये जगन्मङ्गले,
चन्द्राम्भोजवटे पुटे परिसरे धात्रा समाराधिते ।
श्रीरङ्गे भुजगेन्द्रभोगशयने शेते सदा यः पुमा-
नार्तत्राणपरायणः स भगवान्नारायणो मे गतिः ॥१७॥
वात्सल्यादभयप्रदानसमयादार्तार्ति-निर्वापणा-
दौदार्यादवशोषणादगणितश्रेयः पदप्रापणाद् ।
सेव्यः श्रीपतिरेव सर्वजगतामेते हि तत्साक्षिणः,
प्रहलादश्च विभिषणश्च करिराट् पाञ्चाल्यहल्या ध्रुवाः ॥१८॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं
श्रीमदार्तत्राणनारायणाष्टादशकं समाप्तम्।

विष्णुस्तुतिविषयक-स्फुटश्लोकाः

श्रीगणेशाय नमः

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥१॥
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥२॥
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३॥
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥४॥
नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त ! वासुदेव ! नमोस्तु ते ॥५॥
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥६॥
नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥७॥
आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो नः स्रष्टा यः पिता यश्च पाता यो वेत्ति सर्वाणि जगन्ति साक्षी ।
यो देवनामान्यखिलानि धत्ते स मङ्गलं नः सततं तनोतु ।।९।।

श्रीगणेशाय नमः

शिवस्तुतयः

विश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीय - जटाकलापं,
गौरीनिरन्तर - विभूषित - वामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।१।।
वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं,
वागीश - विष्णु - सुरसेवित - पादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।२।
भूताधिपं भुजग - भूषण - भूषिताङ्गं,
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशाङ्कुशा - भयवरप्रद - शूलपाणिं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।३।।
शीतांशुशोभित - किरीट - विराजमानं,
भालेक्षणानल - विशोषित - पञ्चबाणम् ।
नागाधिपा - रचित - भासुरकर्णपूरं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।४।।
पञ्चाननं दुरति - मत्तमतङ्गजानां,
नागान्तकं दनुजपुङ्गव - पन्नगानाम् ।
दावानलं मरण - शोक - जराटवीनां,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।५।।
तेजोमयं सगुण - निर्गुणमद्वितीय -
मानन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नागात्मकं सकल - निष्कलमात्मरूपं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।।६।।
आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां,
पापे मतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥

रागादिदोषरहितं स्वजनानुराग-
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्य - धैर्य - सुभगं गरलाभिरामं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य,
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं,
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥१०॥

इति श्री महर्षिव्यासकृतं विश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्री शिवताण्डवस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

जटाटवी-गलज्जल-प्रवाहपावित-स्थले
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥१॥

जटाकटाह-सम्भ्रमं-भ्रमन्निलिम्प-निर्झरी-
विलोल - वीचि - वल्लरी - विराजमान-मूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्-ललाटपट्ट-पावके
किशोर-चन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

धरा-धरेन्द्र - नन्दिनी - विलासबन्धु-बन्धुर-
स्फुरद्दिगन्त-सन्तति प्रमोदमान-मानसे ।
कृपा-कटाक्ष-धोरणी-निरुद्ध-दुर्धरापदि-
क्वचिद् - दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

जटा - भुजङ्ग - पिङ्गल- स्फुरत्फणा-मणिप्रभा-
कदम्ब-कुङ्कुमद्रव-प्रलिप्त-दिग्वधूमुखे ।
मदान्ध - सिन्धुरासुर - त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

सहस्र-लोचन-प्रभृत्यशेष-लेख-शेखर
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रसूनधूलि-धोरणी-विधूसराङ्घ्रि-पीठभूः ।
भुजङ्ग-राजमालया निबद्ध-जाट-जूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धु शेखरः ॥५॥
ललाट-चत्वर-ज्वलद्धनञ्जय-स्फुलिङ्गया
निपीत - पञ्चसायकं नमन्निलिम्प-नायकम् ।
सुधा-मयूख-लेखया विराजमान-शेखरं
महाकपालि सम्पदे सरिज्जटालमस्तु नः ॥६॥
कराल-भाल-पट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वल-
द्धनञ्जयाहुतीकृत - प्रचण्ड - पञ्चसायके ।
धराधरेन्द्र-नन्दिनी-कुचाग्र-चित्र-पत्रक
प्रकल्पनैक-शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥
नवीनमेघ-मण्डली-निरुद्ध-दुर्धरस्फुरत्-
कुहू-निशीथिनी-तमः प्रबन्ध-बद्धकन्धरः ।
निलिम्प - निर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसुन्दरः
कला-निधान-बन्धुरः श्रियं जगद्-धुरन्धरः ॥८॥
प्रफुल्ल - नीलपङ्कज - प्रपञ्चकालिमप्रभाऽ-
वलम्बिकण्ठ-कन्दली रुचिप्रबद्ध-कन्धरः ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥
अखर्व-सर्वमङ्गला-कला-कदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाह-माधुरी-विजृम्भणा-मधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥
जयत्यदभ्र-विभ्रम-भ्रमद्भुजङ्गविभ्रमद्-
विनिर्गमक्रमस्फुरत्-करालभाल-हव्यवाट् ।
धिमिद्धि मिद्धिधिमिद्ध्वनन् मृदङ्गतुङ्ग मङ्गल-
ध्वनिक्रमप्रवर्तित-प्रचण्ड-ताण्डवः शिवः ॥११॥
दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजो-
र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्-विपक्ष-पक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् । ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कदा निलिम्प निर्झरी निकुञ्ज-कोटरे वसन्
विमुक्त-दुर्मतिः सदा शिरस्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोल-लोल-लोचनो ललाम-भाल-लग्नकः
शिवेति-मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥
निलिम्पनाथनागरी-कदम्बमौलि-मल्लिका
निगुम्फ-निर्भर-क्षरन्मधूर्मिका-मनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं
परश्रियः परं पदं तदङ्गजत्विषां चयः ॥१४॥
प्रचण्ड-वाडवानल-प्रभाशुभ-प्रचारिणी-
महाष्टसिद्धि-कामिनी-जनावहूत-जल्पनः ।
विमुक्त-वामलोचना-ललामभाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१५॥
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन् नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां तु शङ्करस्य चिन्तनम् ॥१६॥
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१७॥

इति श्रीदशकन्धरविरचितं शिवताण्डवस्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीरुद्राष्टकम्

॥श्रीगणेशाय नमः॥

नमामीशमीशान - निर्वाणरूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१॥
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं,
गिरा-ग्यान-गोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल - कालं कृपालं,
गुणागार-संसारपारं नतोऽहम् ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुषाराद्रि - सङ्काश - गौरं गभीरं,

मनोभूत- कोटि-प्रभा-श्री-शरीरम् ।

स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा,

लसद्भाल - बालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ।।३।।

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं,

प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।

मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं,

प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि ।।४।।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,

अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम् ।

त्रयःशूल - निर्मूलनं शूलपाणिं,

भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ।।५।।

कलातीत - कल्याण - कल्पान्तकारी,

सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।

चिदानन्द - सन्दोह - मोहापहारी,

प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।।६।।

न यावद् उमानाथपादारविन्दं,

भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।

न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं,

प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ।।७।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,

नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।

जराजन्मदुःखौघ तातप्यमानम्,

प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ।।८।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।

इति श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।१।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।।२।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।।३।।
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।।४।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।।५।।
पञ्चाक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।६।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

पशुपत्यष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

पशुपतीन्दुपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम् ।
प्रणत-भक्तजनार्तिहरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।१।।

न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरिबलं कुलम्।
अवति कोऽपि न कालवशं गतं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।२।।

मुरज-डिण्डिम-वाद्य-विलक्षणं मधुर-पञ्चमनाद-विशारदम् ।
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।३।।

शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम् ।
अभयदं करुणावरुणालयं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।४।।

नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारमुदं वृषभध्वजम् ।
चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।५।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजिफलप्रदम् ।
प्रलयदग्ध-सुराऽसुरमानवं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।६।।

मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरण-जन्म-जरा-भय-पीडितम् ।
जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।७।।
हरिविरञ्चि-सुराधिप-पूजितं यमजनेश-धनेश-नमस्कृतम् ।
त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।।८।।
पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा ।
पठति संशृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम् ।।९।।

इति श्रीपृथिवीपतिसूरिविरचितं पशुपत्यष्टकं सम्पूर्णम्।

शिवाष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं,
जगन्नाथनाथं सदानन्दभाजम् ।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।१।।
गले मुण्डमालं तनौ सर्पजालं,
महाकालकालं गणेशाधिपालम् ।
जटाजूटभङ्गोत्तरङ्गैर्विशालं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।२।।
मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं,
महामण्डलं भस्मभूषाधरं तम् ।
अनादिं ह्यपारं महामोहमारं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।३।।
तटाधोनिवासं महाट्टाट्टहासं,
महापापनाशं सदा सुप्रकाशम् ।
गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।४।।
गिरीन्द्रात्मजासङ्गृहीतार्धदेहं,
गिरौ संस्थितं सर्वदासन्नगेहम् ।
परब्रह्म- ब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।५।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं,
पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् ।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।६।।
शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं,
त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।
अपर्णाकलत्रं चरित्तं विचित्रं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।७।।
हरं सर्पहारं चिताभूविहारं,
भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् ।
श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं,
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ।।८।।
स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणेः,
पठेत् सर्वदा भर्गभावानुरक्तः ।
स पुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं,
विचित्रः समासाद्य मोक्षं प्रयाति ।।९।।

इति शिवाष्टकं सम्पूर्णम्

श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

पुष्पदन्त उवाच-

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर! निरपवादः परिकरः ।।१।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।।२।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।।
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ।।४।।
किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन् मुखरयति मोहाय जगतः ।।५।।
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।।
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसिपयसामर्णव इव ।।७।।
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।।८।।
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।।९।।
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ।।१०।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्याऽप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघु दृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥१७॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन् नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।१९।।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कृतपरिकरः कर्मसु जनः ।।२०।।
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ।।२१।।
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।।२२।।
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ।।२३।।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ।।२४।।
मनः प्रायश्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ।।२५।।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ।।२६।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ।।२७।।

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहाँ-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरित देवः श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ।।२८।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ।।२९।।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।।३०।।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।३१।।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।३२।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।३३।।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमाँश्च ।।३४।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं स्नानं यागादिकाः क्रियाः ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महिम्नः स्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।३५।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं सर्वमीश्वरवर्णनम् ।
अनौपम्यं मनोहारि पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।।३६।।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।३७।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।३८।।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।।३९।।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हर प्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।।४०।।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ।।४१।।

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।४२।।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

इति श्रीपुष्पदन्ताचार्यविरचितं श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यस्तवराजः

श्रीगणेशाय नमः

वशिष्ठ उवाच-

स्तुवँस्तत्र ततः साम्बः कृशो धमनिसन्ततः ।
राजन्नामसहस्त्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम् ।।१।।
खिद्यमानं तु तं दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजं तदा ।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ।।२।।

श्रीसूर्य उवाच-

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत ।
अलं नामसहस्रेण पठ स्तवमिमं शुभम् ।।३।।
यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च ।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ।।४।।
विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः ।।५।।
लोकप्रकाशकः श्रीमाँल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ।
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्ता हर्ता तमिस्रहा ।।६।।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः ।
गभस्तिहस्तो ब्रध्नश्च सर्वदेवनमस्कृतः ।।७।।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम ।
देहारोग्यकरश्चैव धनवृद्धियशस्करः ।।८।।
स्तवराज इति ख्यातिस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ।
य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्येऽस्तमनोदये ।।९।।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
कायिकं वाचिकं चैव मानसं यच्च दुष्कृतम् ।।१०।।
एतज्जाप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति न संशयः ।
एष जप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च ।।११।।
बलिमन्त्रोऽर्थमन्त्रश्च धूपमंत्रस्तथैव च ।
अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे ।।१२।।
एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः ।
आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत ।।१३।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम् ।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमांस्तस्माद् दुर्गाद्विमुक्तवान् ॥१४॥
इति सूर्यस्तवराजः सम्पूर्णः।

सूर्याष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ॥१॥
सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥२॥
लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मा विष्णु-महेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च ।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥५॥
बन्धूकपुष्प-सङ्काशं हारकुण्डलभूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःप्रदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥७॥
तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञान-विज्ञान-मोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ॥८॥
सूर्याष्टकं पठेन्नित्यं ग्रहपीडाप्रणाशनम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान् भवेत् ॥९॥
आमिषं मधुपानं च यः करोति रवेर्दिने ।
सप्तजन्म भवेद्रोगी प्रतिजन्म दरिद्रता ॥१०॥
स्त्री-तैल-मधु-मांसानि यस्त्यजेत्तु रवेर्दिने ।
न व्याधिःशोक-दारिद्र्यं सूर्यलोकं गच्छति ॥११॥

इति सूर्याष्टकस्तोत्रम्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः ।
केयूरवान्मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्यवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥१॥

सशङ्खचक्रं रविमण्डले स्थितं
कुशेशयाक्रान्तमनस्तमच्युतम् ।
भजामि बुद्ध्या तपनीयमूर्तिं
सुरोत्तमं चित्रविभूषणोज्ज्वलम् ॥२॥

नमः सवित्रे जगदेकचक्षुषे जयत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे ।
त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे विरञ्चिनारायणशङ्करात्मने ॥३॥

यस्योदयेनेह जगत्प्रबुध्यते प्रवर्तते चाखिलकर्मसिद्धये ।
ब्रह्मेन्द्रनारायणरुद्रवन्दितः स नः सदा यच्छतु मङ्गलं रविः ॥४॥

नमोऽस्तु सूर्याय सहस्ररश्मये सहस्रशाखान्वितसम्भवात्मने ।
सहस्रयागोद्भवभावभागिने सहस्रसंख्यायुगधारिणे नमः ॥५॥

यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम् ।
दारिद्र्यदुःखक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥६॥

यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं विप्रस्तुतं भावनमुक्तिकोविदम् ।
तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥७॥

यन्मण्डलं ज्ञानधनं त्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् ।
समस्ततेजोमयदिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥८॥

यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् ।
यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥९॥

यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजुःसामसु सम्प्रगीतम् ।
प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१०॥

यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके ।
यत्कालकालादिमनादिरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेयण्म् ॥११॥

यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखाख्यं यदक्षरं पापहरं जनानाम् ।
यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम् ।
यस्मिञ्जगत्संहरतेऽखिलञ्च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१३।।
यन्मण्डलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम् ।
सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१४।।
यन्मण्डलं ब्रह्मविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसङ्घाः ।
यन्मण्डलं वेदविदः स्मरन्ति पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१५।।
यन्मण्डलं वेदविदोपगीतं यद्योगिनां योगपथानुगम्यम् ।
तत्सर्ववेदं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् ।।१६।।
मण्डलाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत्सततं नरः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा सूर्यलोके महीयते ।।१७।।

इति श्रीमदादित्यहृदये सूर्यमण्डलाष्टकं सम्पूर्णम्।

सूर्यस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

सप्ताश्वरथसमारूढाऽरुणसारथिमुत्तमम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।१।।
बन्धूक-पुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषणम् ।
एकचक्रधरं देवं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।२।।
लोहितस्वर्णसङ्काशं सर्वलोकपितामहम् ।
सर्वव्याधिहरं देवं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।३।।
त्वं देव ईश्वरः शक्र-ब्रह्मा-विष्णु-महेशराट् ।
परं धर्मं परं ज्ञानं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।४।।
त्वं देवलोककर्ता च कीर्त्यात्मा किरणांशकम् ।
तेजोरूपधरं देवं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।५।।
पृथिव्यप्तेजोवायुश्चात्माऽप्याकाशमेव च ।
सर्वज्ञं श्रीजगन्नाथं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।६।।
अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
गगनलिङ्गमाराध्यं त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।७।।
निर्मलं निर्विकल्पं च निर्विकारं निरामयम् ।
जगत्कर्ता जगद्धर्तस्त्वां सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यस्तोत्रं जपेन्नित्यं ग्रहपीडाविनाशनम् ।
धनं धान्यं मनोवाञ्छां श्रियः प्राप्नोति नित्यशः ॥९॥
शिवरात्रिसहस्रेषु जागरणं भवेत् ।
यत्फलं लभते सर्वं तद् वै सूर्यस्य दर्शनात् ॥१०॥
एकादशीसहस्राणि सङ्क्रान्त्ययुतमेव च ।
सप्तकोटिसु दर्शेषु तत्फलं सूर्यदर्शनात् ॥११॥
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
कोटिकन्याप्रदानानि तत्फलं सूर्यदर्शनात् ॥१२॥
गयापिण्डः परं दाने पितॄणां च समुद्धरम् ।
दृष्ट्वा ह्यग्रेश्वरं देवं तत्फलं समवाप्नुयात् ॥१३॥
अग्रेश्वरसमोपेतो सोमनाथस्तथैव च ।
कैदारमुदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥१४॥
सूर्यस्तोत्रं पठेन्नित्यमेकचित्तः समाहितः ।
दुःखदारिद्र्यनिर्मुक्तः सूर्यलोकं स गच्छति ॥१५॥

इति सूर्यस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम् ।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥१॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम् ।
उपगम्याब्रवीद्राममगस्त्यो भगवाँस्तदा ॥२॥
राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम् ।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ॥३॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहं जपेन्नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
एष देवःसुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ।।७।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः ।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः ।।८।।
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः ।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राणा ऋतुकर्ता प्रभाकरः ।।९।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगःपूषा गभस्तिमान् ।
सुवर्णस्तपनो भानुः स्वर्णरेता दिवाकरः ।।१०।।
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान् ।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान् ।।११।।
हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोभास्करो रविः ।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ।।१२।।
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः ।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ।।१३।।
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः ।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ।।१४।।
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः ।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन्नमोऽस्तु ते ।।१५।।
नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः ।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ।।१६।।
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः ।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ।।१७।।
नमः उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ।।१८।।
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यादित्यवर्चसे ।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ।।१९।।
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने ।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः।।२०।।
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे ।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ।।२१।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः ।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ।।२२।।
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः ।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोतृणाम् ।।२३।।
देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च ।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः ।।२४।।
एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च ।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ।।२५।।
पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ।।२६।।
अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं हनिष्यसि ।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम् ।।२७।।
एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ।।२८।।
आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ।।२९।।
रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धार्थं समुपागमत् ।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत् ।।३०।।
अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति।।३१।।
इत्यार्षे वाल्मीकीये रामायणे आदित्यहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

देवीस्तुतयः

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ।।१।।
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।३।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।४।।

परित्यक्त्वा देवान् विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ।।५।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्कोरङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।
तवापर्णे कर्णे विशतिमनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ।।६।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ।।७।।

न मोक्षस्याकाङ्क्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखिसुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।।८।।

नाराधिताऽसि विधिना विविधोपचारैः
किं रूक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥

जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।
अपराधपरम्परापरं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥

इति श्रीमदभिनवशङ्कराचार्यविरचितं देव्यपराध-क्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

आनन्दलहरी

श्रीगणेशाय नमः

भवानि स्तोतुं त्वां प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः
प्रजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पञ्चभिरपि ।
न षड्भिः सेनानीर्दशशतमुखैरप्यहिपति-
स्तदान्येषां केषां कथय कथमस्मिन्नवसरः ॥१॥

घृतक्षीरद्राक्षामधुमधुरिमा कैरपि पदै-
र्विशिष्यानाख्येयो भवति रसनामात्रविषयः ।
तथा ते सौन्दर्यं परमशिवदृङ्मात्रविषयः
कथङ्कारं ब्रूमः सकलनिगमागोचरगुणे ॥२॥

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला
ललाटे काश्मीरं विलसित गले मौक्तिकलता ।
स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी
भजामि त्वां गौरीं नगपतिकिशोरीमविरतम् ॥३॥

विराजन्मन्दार-द्रुमकुसुमहार-स्तनतटी
नदद्वीणानाद-श्रवणविलसत्कुण्डलगुणा ।
नताङ्गी मातङ्गी रुचिरगतिभङ्गी भगवती
सती शम्भोरम्भोरुहचटुलचक्षुर्विजयते ॥४॥

नवीनार्कभ्राजन्मणिकनकभूषापरिकरै-
र्वृताङ्गी सारङ्गीरुचिरनयनाङ्गीकृतशिवा ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

तडित्पीता पीताम्बरललित-मञ्जीर-सुभगा
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ममाऽपर्णा पूर्णा निरवधिसुखैरस्तु सुमुखी ॥५॥

हिमाद्रेः सम्भूता सुललितकरैः पल्लवयुता
सुपुष्पा मुक्ताभिर्भ्रमरकलिता चालकभरैः ।
कृतस्थाणुस्थाना कुचफलनता सूक्तिसरसा
रुजां हन्त्री गन्त्री विलसति चिदानन्दलतिका ॥६॥

सपर्णामाकीर्णा कतिपयगुणैः सादरमिह
श्रयन्त्यन्ये वल्लीं मम तु मतिरेवं विलसति ।
अपर्णैका सेव्या जगति सकलैर्यत्परिवृतः
पुराणोऽपि स्थाणुः फलति किल कैवल्यपदवीम् ॥७॥

विधात्री धर्माणां त्वमसि सकलाम्नायजननी,
त्वमर्थानां मूलं धनदनमनीयाङ्घ्रिकमले ।
त्वमादिः कामानां जननि कृतकन्दर्पविजये
सतां मुक्तेर्बीजं त्वमसि परमब्रह्ममहिषी ॥८॥

प्रभूता भक्तिस्ते यदपि न ममालोलमनस-
स्त्वया तु श्रीमत्या सदयमवलोक्योऽहमधुना ।
पयोदः पानीयं दिशति मधुरं चातकमुखे,
भृशं शङ्केकैर्वा विधिभिरनुनीता मम मतिः ॥९॥

कृपापाङ्गालोकं वितर तरसा साधुचरिते
न ते युक्तोपेक्षा मयि शरणदीक्षामुपगते ।
न चेदिष्टं दद्यादनुपदमहो कल्पलतिका
विशेषः सामान्यैः कथमितरवल्लीपरिकरैः ॥१०॥

महान्तं विश्वासं तव चरणपङ्केरुहयुगे
निधायाऽन्यन्नैवाश्रितमिह मया दैवतमुमे ।
तथापि त्वच्चेतो मयि यदि न जायेत सदयं
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥११॥

अयः स्पर्शे लग्नं सपदि लभते हेमपदवीं
यथा रथ्यापाथः शुचि भवति गङ्गौघमिलितम् ।
तथा तत्तत्पापैरतिमलिनमन्तर्मम यदि
त्वयि प्रेम्णासक्तं कथमिव न जायेत विमलम् ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
त्वदन्यस्मादिच्छाविषयफललाभेन नियमः-
स्त्वमर्थानामिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे ।
इति प्राहुः प्राञ्चः कमलभवनाद्यास्त्वयि मन-
स्त्वदासक्तं नक्तं दिवमुचितमीशानि कुरु तत् ।।१३।।

स्फुरन्नानारत्नं स्फटिकमयभित्ति प्रतिफलं-
त्वदाकारं चञ्चच्छशधरकलासौधशिखरम् ।
मुकुन्द-ब्रह्मेन्द्रप्रभृतिपरिवारं विजयते
तवागारं रम्यं त्रिभुवनमहाराजगृहिणी ।।१४।।

निवासः कैलासे विधिशतमखाद्याः स्तुतिकराः
कुटुम्बं त्रैलोक्यं कृतकरपुटः सिद्धिनिकरः ।
महेशः प्राणेशस्तदवनिधराशीशतनये
न ते सौभाग्यस्य क्वचिदपि मनागस्ति तुलना ।।१५।।

वृषो वृद्धो यानं विषमशनमाशा निवसनं
श्मशानं क्रीडाभूर्भुजगनिवहो भूषणनिधिः ।
समग्रा सामग्री जगति विदितैवं स्मररिपो-
र्यदेतस्यैश्चर्यं तव जननि सौभाग्यमहिमा ।।१६।।

अशेषब्रह्माण्ड-प्रलयविधि-नैसर्गिकमतिः
श्मशानेष्वासीनः कृतभसितलेपः पशुपतिः ।
दधौ कण्ठे हालाहलमखिलभूगोलकृपया
भवत्याः सङ्गत्याः फलमिति च कल्याणि कलये ।।१७।।

त्वदीयं सौन्दर्यं निरतिशयमालोक्य परया
भियैवासीद् गङ्गा जलमयतनुः शैलतनये ।
तदेतस्यास्तस्माद्वदनकमलं वीक्ष्य कृपया
प्रतिष्ठामातन्वन् निजशिरसि वासेन गिरिशः ।।१८।।

विशालश्रीखण्डद्रवमगमदाकीर्णघुसृणः
प्रसूनव्यामिश्रं भगवति तवाभ्यङ्गसलिलम् ।
समादाय स्रष्टा चलितपदपांसून्निजकरैः
समाधत्ते सृष्टिं विबुधपुरपंकेरुहदृशाम् ।।१९।।

वसन्ते सानन्दे कुसुमितलताभिः परिवृते
स्फुरन्नानापद्मे सरसि कलहंसालिसुभगे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखीभिः खेलन्तीं मलयपवनान्दोलितजलैः
स्मरेद्यस्त्वां तस्य ज्वरजनितपीडापसरति ॥२०॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता आनन्दलहरी सम्पूर्णा।

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा

श्रीगणेशाय नमः

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥१॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥२॥
सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥३॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥४॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥५॥
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६॥
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥७॥

इति सप्तश्लोकी दुर्गा सम्पूर्णा।

भवान्यष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता न पुत्री न पुत्रो न भृत्यो न भर्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात-र्गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥४॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥६॥

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीभगवतीस्तोत्रम्

जय भगवति देवि नमो वरदे, जय पापविनाशिनि बहुफलदे ।
जय शुम्भनिशुम्भकपालधरे, प्रणमामि तु देवि नरार्तिहरे ॥१॥

जय चन्द्रदिवाकरनेत्रधरे, जय पावकभूषितवक्त्रवरे ।
जय भैरवदेहनिलीनपरे, जय अन्धकदैत्यविशोषकरे ॥२॥

जय महिषविमर्दिनि शूलकरे, जय लोकसमस्तकपापहरे ।
जय देवि पितामहविष्णुनते, जय भास्करशक्रशिरोऽवनते ॥३॥

जय षण्मुखसायुधईशनुते, जय सागरगामिनि शम्भुनुते ।
जय दुःखदरिद्रविनाशकरे, जय पुत्रकलत्रविवृद्धिकरे ॥४॥

जय देवि समस्तशरीरधरे, जय नाकविदर्शिनि दुःखहरे ।
जय व्याधिविनाशिनि मोक्षकरे, जय वाञ्छितदायिनि सिद्धिवरे ॥५॥

एतद्व्यासकृतं स्तोत्रं यः पठेन्नियतः शुचिः ।
गृहे वा शुद्धभावेन प्रीता भगवती सदा ॥६॥

इति व्यासकृतं श्रीभगवतीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अन्नपूर्णास्तोत्रम्

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

अथ ध्यानम्–

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्
तारानायक शेखरां स्मितमुखीमापीन-वक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्ण-रत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थ-रक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ।।

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी
निर्धूताखिल-घोरपावनकरी प्रत्यक्षमाहेश्वरी ।
प्रालेयाचल-वंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।१।।

नानारत्न-विचित्र-भूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी
मुक्ताहार-विलम्बमान-विलसद्वक्षोज-कुम्भान्तरी ।
काश्मीरागुरुवासिता रुचिकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।२।।

योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी धर्माऽर्थनिष्ठाकरी
चन्द्रार्कानल-भासमानलहरी त्रैलोक्यरक्षाकरी ।
सर्वैश्वर्य-समस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।४।।

दृश्यादृश्य-प्रभूतवाहनकरी ब्रह्माण्डभाण्डोदरी,
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञानदीपाङ्कुरी ।
श्रीविश्वेशमनःप्रसादनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।५।।

उर्वी सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी,
वेणीनील-समान-कुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी ।
सर्वानन्दकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।६।।

आदिक्षान्त-समस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी
काश्मीरात्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्याङ्कुरा शर्वरी ।
कामाकाङ्क्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।७।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वामं स्वादु-पयोधर-प्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी ।

भक्ताभीष्टकरी दशाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी,

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।९।।

क्षत्त्रत्राणकरी महाभयकरी माता कृपासागरी,

साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी ।

दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी,

भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।।१०।।

अन्नपूर्णे सदा पूर्णे शङ्करप्राणवल्लभे ।
ज्ञान-वैराग्य-विद्यार्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।११।।

माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः ।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम् ।।१२।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितम् अन्नपूर्णास्तोत्रं सम्पूर्णम्।

सरस्वतीस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

रविरुद्रपितामहविष्णुनुतं हरिचन्दनकुङ्कुमपङ्कयुतम् ।
मुनिवृन्दगणेन्द्रसमान्वयुतं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।१।।

शशिशुद्धसुधाहिमधामयुतं शरदम्बरबिम्बसमानकरम् ।
बहुरत्नमनोहरकान्तियुतं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।२।।

कनकाब्ज-विभूषित-भूति-भवं भवभावविभाषित-भिन्नपदम् ।
प्रभुचित्तसमाहित-साधुपदं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।३।।

भवसागर-मज्जन-भीतिनुतं प्रतिपादितसन्ततिकारमिदम् ।
विमलादिकशुद्धविशुद्धपदं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।४।।

मतिहीन-जनाश्रय-पादमिदं सकलागमभाषित-भिन्नपदम् ।
परिपूरितविश्वमनेकभवं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।५।।

परिपूर्णमनोरथधामनिधिं परमार्थ-विचार-विवेक-विधिम् ।
सुरयोषित-सेवित-पादतलं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।६।।

सुर-मौलि-मणिद्युति-शुभ्रकरं विषयादिमहाभय-वर्णहरम् ।
निजकान्ति-विलेपित-चन्द्रशिवं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ।।७।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

गुणनैककुलं स्थितिभीतिपदं गुणगौरव-गर्वित-सत्यपदम् ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कमलोदर-कोमल-पादतलं तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥८॥

त्रिसन्ध्यं यो जपेन्नित्यं जले वापि स्थले स्थितः ।
पाठमात्राद्भवेत्प्राज्ञो ब्रह्मनिष्ठः पुनः पुनः ॥९॥

शारदाभुजङ्गस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

सुवक्षोजकुम्भां सुधापूर्णकुम्भां
प्रसादावलम्बां प्रपुण्यावलम्बाम् ।
सदास्येन्दुबिम्बां सदानोष्ठबिम्बां
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥१॥

कटाक्षे दयार्द्रां करे ज्ञानमुद्रां
कलाभिर्विनिद्रां कलापैः सुभद्राम् ।
पुरस्त्रीं विनिद्रां पुरस्तुङ्गभद्रां
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥२॥

ललामाङ्कफालां लसद्गानलोलां
स्वभक्तैकपालां यशःश्रीकपोलम् ।
करे त्वक्षमालां कनत्प्रत्नलोलां
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥३॥

सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैणीं
रमत्कीरवाणीं नमद्वज्रपाणिम् ।
सुधामन्थरास्यां मुदा चिन्त्यवेणीं
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥४॥

सुशान्तां सुदेहां दृगन्ते कचान्तां
लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम् ।
स्मरेत्तापसैः संगपूर्वस्थितां तां
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥५॥

कुरङ्गे तुरङ्गे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे
मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम् ।
महत्यां नवम्यां सदा सामरूपां
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वलत्कान्तिवह्निं जगन्मोहनाङ्गीं
भजे मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम् ।
निजस्तोत्रसङ्गीतनृत्यप्रभाङ्गीं
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥७॥
भवाम्भोजनेत्राब्जसम्पूज्यमानां
लसन्मन्दहासप्रभावक्त्रचिह्नाम् ।
चलच्चञ्चलाचारुताटङ्ककर्णां
भजे शारदाम्बामजस्रं मदम्बाम् ॥८॥

श्रीमच्छङ्कराचार्यप्रणीतं शारदाभुजङ्गस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

महालक्ष्म्यष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्ख-चक्र-गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥
नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥
सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥
सिद्धि-बुद्धि-प्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनि ।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥४॥
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्ति महेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥
स्थूल-सूक्ष्म-महारौद्रे महाशक्ति महोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥६॥
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥७॥
श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्-स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥८॥
महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥
एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धन-धान्य-समन्वितः ॥१०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महालक्ष्मी भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।११।।

इतीन्द्रकृतमहालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम्।

सङ्कटास्तुतिः

श्रीगणेशाय नमः

सदाविन्दारकोद्वृन्दानन्दासन्दोहदायकम्।
अमन्दमङ्गलागारं वन्दे शङ्करनन्दनम् ।।१।।

किं कार्यं कठिनं कुतः परिभवः कुत्रापवादाद् भयम्,
किं भिन्नं नहि किन्नु राजसदनं गम्यं न विद्या च का ।
किं वाऽन्यज्जगतीतले प्रवद यत्तेषामसम्भावितम्,
येषां हृत्कमले सदा वसति सा तोषप्रदा सङ्कटा ।।२।।

श्रीमहालक्ष्म्यै नमः

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूतिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१।।

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दुर्मदरोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।२।।

अयि जगदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि तोषिणि हासरते
शिखरिशिरोमणि - तुङ्गहिमालयशृङ्ग-निजालय-मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभभञ्जिनि महिषविदारिणि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।३।।

अयि निजहुंकृतिमात्रनिराकृतधूम्रविलोचनधूम्रशते
समरविशोषित-रोषित-शोणितबीजसमुद्भव-बीजलते ।
शिव-शिव-शुम्भ-निशुम्भमहाहवतर्पितभूतपिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।४।।

अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डितशुण्डगजाधिपते
निजभुजदण्डनिपातित-चण्डविपाटितमुण्डभटाधिपते ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिपुगजगण्डविदारण-चण्डपराक्रम-शौण्डमृगाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।५।।

धनुरनुषङ्गरणक्षणसङ्गपरिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनकपिशङ्गपृषत्कनिषङ्गरसद्भटशृङ्गहताबटुके ।
हतचतुरङ्गबल-क्षितिरङ्गघटद्-बहुरङ्गरटद्-बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।६।।

अयि रणदुर्मदशत्रुवधाद्धरदुर्धर-निर्भरशक्तिभृते
चतुरविचारधुरीण-महाशयदूतकृत-प्रथमाधिपते ।
दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-दुरन्तगते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।७।।

अयि शरणागतवैरिवधू जनवीरवराभयदायिकरे
त्रिभुवनमस्तकशूल-विरोधिशिरोधिकृतामलशूलकरे ।
दुमिदुमितामरदुन्दुभिनादमुहुर्मुखरीकृतदिङ्निकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।८।।

सुरललना - तत्तथेयित - थेयितथाभिनयोत्तर - नृत्यरते
कृतकुकुथाकुकुथोदिडदण्डिकतालकुतूहल - गानरते ।
घुघुकुट - धूधुटधिन्धिमितध्वनि - धीरमृदङ्गनिनादरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।९।।

जय जय जाप्यजये जयशब्दपरस्तुतितत्पर-विश्वनुते
झणझण-झिंझिमझिंकृत-नूपुरशिञ्जित मोहित-भूतपते ।
नटितनटार्थ - नटीनटनायक - नाटननाटित -नाट्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।१०।।

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोरमकान्तियुते
श्रितरजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रभृते ।
सुनयन विभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराभिदृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ।।११।।

महित - महाहयमल्लमतल्लिक - बल्लितरल्लितभल्लिरते
विरचितवल्लिपालिकझिल्लिकझिल्लिक . भिल्लिकवर्गवते ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुतकृतफुल्लसमुल्लसितारुण - तल्लजपल्लव - सल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१२॥
अयि सुदतीजन-लालसमानस - मोहन - मन्मथराजसुते
अविरल - गण्डगलन् - मदमेदुर - मत्त-मतङ्गजराजगते ।
त्रिभुवन - भूषणभूत - कलानिधिरूप -पयोनिधिराजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१३॥
कमलदलामलकोमलकान्ति - कलाकलितामल - भालतले
सकलविलासकलानिलय - क्रमकेलिचलत्कल - हंसकुले ।
अलिकुलसंकुल-कुन्तलमण्डल -मौलिमिलद् - बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१४॥
करमुरलीरव - वर्जित - कूजितलज्जित-कोकिलमञ्जुगते
मिलितमिलिन्द - मनोहरगुञ्जित -रञ्जित-शैलनिकुञ्जगते ।
निजगण - भूतमहाशवरीगण - रङ्गणसंभृत - केलिरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१५॥
कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृत-चण्डरुचे
जितकनकाचलमौलिमदोर्जितगर्जितकुञ्जर-कुम्भकुचे ।
प्रणतसुरासुरमौलिमणि-स्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१६॥
विजितसहस्रकरैक-सहस्रकरैक-सहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारक-सङ्गरतारक-सङ्गरतारक सूनुनुते ।
सुरथसमाधिसमानसमाधिसमानसमाधिसुजाप्यरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१७॥
पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत् ।
तव पदमेव परं पदमस्त्विति शीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१८॥
कनकलसत्कलशीसुजलैरनुषिञ्चति तेऽङ्गणरङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भनटीपरिरम्भसुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि सुवाणि पथं मम देहि शिवम्
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव विमलेन्दुकलं वदनेन्दुमलं कलयन्ननुकूलयते
किमु पुरहूत-पुरीन्दमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवमानधने भवती कृपया किमु न क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२०॥
अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननीति यथाऽसि मयाऽसि तथाऽनुमतासि रमे ।
यदुचितमत्र भवत्पुरगं कुरु शाम्भवि देवि दयां कुरु मे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२१॥
स्तुतिमिमां स्तिमितः सुसमाधिना
नियमतो यमतोऽनुदिनं पठेत् ।
परमया रमया स निषेव्यते
परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ॥२२॥

इति सङ्कटास्तुतिः समाप्ता।

त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्ब कादम्बिनीं
नितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनोसेविताम्।
नवाम्बुरुह-लोचनामभिनवाम्बुध-श्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥१॥
कदम्बवनवासिनीं कनक-वल्लकी-धारिणीं
महार्हमणिहारिणीं मुखसमल्लसद्वारुणीम्।
दयाविभवकारिणीं विशदलोचनीं चारिणीं
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥२॥
कदम्बवनशालया कुचभारोल्लसन्मालया
कुचोपमितशैलया गुरुकृपालसद्वेलया।
मदारुणकपोलया मधुरगीतवाचालया
कयाऽपि घननीलया कवचिता वयं लीलया॥३॥
कदम्बवनमध्यगां कनकमण्डलोपस्थितां
षडम्बुरुहवासिनीं सततसिद्धसौदामिनीम्।
विडम्बितजपारुचिं विकचचन्द्रचूडामणिं
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुचाञ्चितविपञ्चिकां कुटिलकुन्तलालङ्कृतां
कुशेशयनिवासिनीं कुटिलचित्तविद्वेषिणीम्।
मदारुणविलोचनां मनसिजारिसम्मोहिनीं
मतङ्गमुनिकन्यकां मधुरभाषिणीमाश्रये।।५।।
स्मेरत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिर-बिन्दु-नीलाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मधुविधूर्णनेत्राञ्चलाम्।
घनस्तन भारोन्नतां गलितचूलिकां श्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये।।६।।
सुकुङ्कुम-विलेपनामलक-चुम्बिकस्तूरिकां
समन्दहसितेक्षणां सशरचाप-पाशाङ्कुशाम्।
अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां
जपाकुसुम-भासुरां जपविधौ स्मराम्यम्बिकाम्।।७।।
पुरन्दर-पुरन्ध्रिका-चिकुरबन्धसैरन्ध्रिकां
पितामहपतिव्रतां पटुपटीर-चर्चारताम्।
मुकुन्दरमणीं मणीलसदलंक्रियाकारिणीं
भजामि भुवनाम्बिकां सुरवधुटिकाचेटिकाम्।।८।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

प्रकीर्णस्तुतयः

कालभैरवाष्टकम्

श्रीगणेशाय नमः

देवराज-सेव्यमान-पावनाङ्घ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ।
नारदादि-योगिवृन्द-वन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।१।।
भानुकोटि-भास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ।।२।।
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
काशिकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥३॥

भुक्ति-मुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तचारुविग्रहम् ।
विनिक्वणन्-मनोज्ञ-हेमकिङ्किणी-लसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥४॥

धर्मसेतुपालकं स्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ।
स्वर्णवर्णशेषपाश-शोभिताङ्ग-मण्डलम्
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥५॥

रत्नपादुका-प्रभाभिराम-पादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम् ।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥६॥

अट्टहास-भिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं
दृष्टिपात-नष्टपाप-जालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥७॥

भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवास-लोकपुण्य-पापशोधकं विभुम् ।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे ॥८॥

कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं
ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ।
शोक-मोह-दैन्यलोभ-कोपताप-नाशनम्
प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं नरा ध्रुवम् ॥९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं कालभैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बटुकभैरवस्तुतिः

श्रीगणेशाय नमः

करकलितकपालः कुण्डली दण्डपाणि-
स्तरुणतिमिरनीलव्यालयज्ञोपवीती ।
क्रतुसमयसपर्य्याविघ्नविच्छेदहेतु-
र्जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मा भूतभावनः
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालश्च क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट् ॥१॥
श्मशानवासी मासाशी खर्पराशी स्मरान्तकः ।
रक्तपः पानपः सिद्धः सिद्धिदः सिद्धिसेवितः ॥२॥
कङ्कालः कालशमनः कलाकाष्ठातनुः कविः ।
त्रिनेत्री बहुनेत्रश्च तथा पिङ्गललोचनः ॥३॥
शूलपाणिः खड्गपाणिः कङ्काली धूम्रलोचनः ।
अभीरुर्भैरवीनाथो भूतपो योगिनीपतिः ॥४॥
धनदो धनहारी च धनवान् प्रतिभागवान् ।
नागहारो नागपाशो व्योमकेशः कपालभृत् ॥५॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः ।
त्रिलोचनो ज्वलन्नेत्रस्त्रिशिखी च त्रिलोकपः ॥६॥
त्रिनेत्रतनयो डिम्भः शान्तः शान्तजनप्रियः ।
बटुको बहुवेषश्च खट्वाङ्गवरधारकः ॥७॥
भूताध्यक्षः पशुपतिः भिक्षुकः परिचारकः ।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डुलोचनः ॥८॥
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शङ्करप्रियबान्धवः ।
अष्टमूर्तिर्निधीशश्च ज्ञानचक्षुस्तपोमयः ॥९॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिखीसखः ।
भूधरो भूधराधीशो भूपतिर्भूधरात्मजः ॥१०॥
कपालधारी मुण्डी च नागयज्ञोपवीतकः ।
जृम्भणो मोहनस्तम्बी मारणः क्षोभणस्तथा ॥११॥
शुद्धो नीलाञ्जनप्रख्यो देहमुण्डविभूषितः ।
बलिभुग्बलिभुङ्नाथो बालो बालपराक्रमः ॥१२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वापत्तारणो दुर्गो दुष्टभूतनिषेवितः ।
कामी कलानिधिः कान्तः कामिनीवशकृद्वशी ।।१३।।
सर्वसिद्धिप्रदो वैद्यः प्रभुर्विष्णुस्तथैव च ।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां भैरवस्य महात्मनः ।।१४।।
मया ते कथितं देवि रहस्यं सर्वकामदम् ।
य इदं पठते स्तोत्रं नामाष्टशतमुत्तमम् ।।१५।।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्नैव भूतभयं तथा ।
न च मारीभयं तस्य ग्रहराजभयं तथा ।।१६।।
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्प्राप्नुयान्मानवः क्वचित् ।
पातकानां भयं नैव पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ।।१७।।
मारीभये राजभये तथा चोराग्निजे भये ।
औत्पातिकभये चैव तथा दुःस्वप्नजे भये ।।१८।।
बन्धने च तथा घोरे पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ।
सर्वं प्रशमनं याति भयं भैरवकीर्तनात् ।।१९।।
एकादशसहस्रैस्तु पुरश्चरणमुच्यते ।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेद्देवि संवत्सरमतन्द्रितः ।।२०।।
स सिद्धिमाप्नुयादिष्टां दुर्लभोऽपि च मानवः ।
षण्मासान्भूमिकामस्तु जपित्वा प्राप्नुयान्महीम् ।।२१।।
राजशत्रुविनाशार्थं पठेन्मासाष्टकं यदि ।
रात्रौ वा जपते देवि नाशयेत्सर्वशत्रुकान् ।।२२।।
जपेन्मासत्रयम्मर्त्यो राजानं वशमानयेत् ।
धनार्थी च सुतार्थी च दारार्थी चापि मानवः ।।२३।।
पठेन्मासत्रयं देवि वारमेकन्तथा निशि ।
धनं पुत्रान्तथा दारान् प्राप्नुयान्नात्र संशयः ।।२४।।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः ।।२५।।
निगडैश्चापि यो बद्धः कारागृहनिपातितः ।
शृङ्खलाबन्धनं प्राप्तः पठेच्चेद्यो दिवानिशम् ।।२६।।
योऽन्यान्समीहते कामांस्तांस्तान् प्राप्नोति निश्चितम् ।
अप्रकाश्यमिदं गुह्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।।२७।।
सुकुलीनाय शान्ताय ऋजवे दम्भवर्जिते ।
दद्यात्स्तोत्रमिदं पुण्यं सर्वकामफलप्रदम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा ततो देवी नामाष्टशतमुत्तमम् ।।२८।।
सन्तोषं परमं प्राप्य भैरवस्य महात्मनः ।
भैरवस्य प्रसन्नोऽभूत्सर्वलोकमहेश्वरी ।।२९।।
भैरवस्तु प्रहृष्टोऽभूत्सर्वगः परमेश्वरः ।
जजाप परया भक्त्या सदा सर्वेश्वरेश्वरीम् ।।३०।।

इति श्रीरुद्रयामले ईश्वरपार्वतीसम्वादे बटुकभैरवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

हनुमत्स्तुतयः

श्रीगणेशाय नमः

मनोजवं मारुत-तुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।१।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।२।।

गोष्पदीकृतवारीशं-मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ।।३।।

अञ्जनानन्दनं वन्दे जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ।।४।।

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ।।५।।

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ।।६।।

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ।।७।।

ध्यायेद् बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं
देवेन्द्रप्रमुखाप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा ।
सुग्रीवादि-समस्तवानरयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियं
संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालङ्कृतम् ।।८।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्यन्मार्तण्डकोटि-प्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थं
मौञ्जी-यज्ञोपवीताऽऽभरण-रुचिशिखा-शोभितं कुण्डलाढ्यम् ।
भक्तानामिष्टदान-प्रवणमनुदिनं वेदनादप्रमोदं
ध्यायेद्देवं विधेयं प्लवगकुलपतिं गोष्पदीभूतवार्धिम् ॥९॥
वज्राङ्गं पिङ्गकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल-मण्डितम् ।
उद्यद्दक्षिण-दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तये ॥१०॥
स्फाटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम् ।
कुण्डलद्वय-संशोभि-मुखाम्भोजं हरिं भजे ॥११॥
उद्यदादित्य-सङ्काशमुदारभुज-विक्रमम्
कन्दर्प-कोटि-लावण्यं सर्वविद्याविशारदम् ।
श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम्
अभयं वरदं दोर्भ्यां कलये मारुतात्मजम् ॥१२॥
अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित ।
प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥१३॥
यो वारान्निधिमल्पपल्वल मिवोल्लङ्घ्य प्रतापान्वितो
वैदेहीघनशोक-तापहरणो वैकुण्ठभक्तप्रियः ।
अक्षाद्यूर्जित-राक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे
सोऽयंवानरपुङ्गवोऽवतु सदा चाऽस्मान् समीरात्मजः ॥१४॥
वज्राङ्गं पिङ्गनेत्रं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डं
सर्वविद्याधिनाथं करतलविधृतं पूर्णकुम्भं दृढं च ।
भक्ताभीष्टाधिकारं विदधति च सदा सुप्रसन्नं कपीन्द्रं
त्रैलोक्यत्राणकं सकलभुवनगं रामदूतं नमामि ॥१५॥
उद्यल्लाङ्गूलकेश-प्रलयजलधरं भीममूर्तिं कपीन्द्रम् ।
वन्दे रामाङ्घ्रिपद्म-भ्रमरपरिवृतं सत्त्वसारं प्रसन्नम् ॥१६॥
वज्राङ्गं वज्ररूपं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डं
दम्भोलिस्तम्भसारप्रहरणविकटम्भूतरक्षोऽधिनाथम् ।
वामे करे वीरभयं वहन्तं शैलं च धत्ते निजकण्ठलग्नं
उद्यानमुत्थाय सुवर्णवर्णं भजे ज्वलत्कुण्डलरामदूतम् ॥१७॥
पद्मरागमणि-कुण्डल-त्विषा पाटलीकृत-कपोलमण्डलम् ।
दिव्यगेह-कदलीवनान्तरे भावयामि पवमाननन्दनम् ॥१८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशावतारस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

नमोऽस्तु नारायण-मन्दिराय नमोऽस्तु हारायणकन्धराय ।
नमोऽस्तु पारायण-चर्चिताय नमोऽस्तु नारायण तेऽर्चिताय ॥१॥
नमोऽस्तु मत्स्याय लयाब्धिगाय नमोऽस्तु कूर्माय पयोब्धिगाय ।
नमो वराहाय धराधराय नमो नृसिंहाय परात्पराय ॥२॥
नमोऽस्तु शुक्राश्रयवामनाय नमोऽस्तु विप्रोत्सवभार्गवाय ।
नमोऽस्तु सीताहितराघवाय नमोऽस्तु पार्थस्तुतयादवाय ॥३॥
नमोऽस्तु बुद्धाय विमोहकाय नमोऽस्तु ते कल्किपदोदिताय ।
नमोऽस्तु पूर्णामितसद्गुणाय समस्तनाथाय हयाननाय ॥४॥
करस्थ-शङ्खोल्लसदक्षमाला - प्रबोधमुद्राभयपुस्तकाय ।
नमोऽस्तु वक्त्रोद्गिरिदागमाय निरस्तहेयाय हयाननाय ॥५॥
रमासमाकारचतुष्टयेन क्रमाच्चतुर्दिक्षु निषेविताय ।
नमोऽस्तु पार्श्वद्वयगद्विरूप-श्रियाभिषिक्ताय हयाननाय ॥६॥
किरीट-पट्टाङ्गट- हार -काञ्ची-सुरत्न-पीताम्बरनूपुराद्यैः ।
विराजिताङ्गाय नमोऽस्तु तुभ्यं सरैः परीताय हयाननाय ॥७॥
विदोषि-कोटीन्दुनिभ-प्रभाय विशेषतो मध्वमुनिप्रियाय ।
विमुक्तवन्द्याय नमोऽस्तु विष्वग्-विधूतविघ्नाय हयाननाय ॥८॥
नमोऽस्तु शिष्टेष्टद-वादिराजकृताष्टकाभिष्टुतचेष्टिताय ।
दशावतारैस्त्रिदशार्थदाय निःशेषबिम्बस्थहयाननाय ॥९॥

इति दशावतारस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

रामस्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

इन्द्र उवाच-

भजेऽहं सदा राममिंदीवराभं भवारण्यदावानलाभाभिधानम् ।
भवानीहृदा भावितानन्दरूपं भवाभावहेतुं भवादिप्रपन्नम् ॥१॥
सुरानीकदुःखौघनाशैकहेतुं नराकारदेहं निराकारमीड्यम् ।
परेशं परानन्दरूपं वरेण्यं हरिं राममीशं भजे भारनाशम् ॥२॥
प्रपन्नाखिलानन्ददोहं प्रपन्नार्तिनिःशेषनाशाभिधानम् ।
तपोयोगयोगीशभावाभिभाव्यं कपीशादिमित्रं भजे राममित्रम् ॥३॥
सदा भोगभाजां सुदूरे विभान्तं सदा योगभाजामदूरे विभान्तम् ।
चिदानन्दकन्दं सदा राघवेशं विदेहात्मजानन्दरूपं प्रपद्ये ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महायोगमायाविशेषानुयुक्तो विभासीश लीलानराकारवृत्तिः ।
त्वदानन्दलीलाकथापूर्णकर्णाः सदानन्दरूपा भवन्तीह लोके ।।५।।
अहं मानपानाभिमत्तप्रमत्तो न वेदाखिलेशाभिमानाभिमानः ।
इदानीं भवत्पादपद्मप्रसादात्त्रिलोकाधिपत्याभिमानो विनष्टः ।।६।।
स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामं धराभारभूतासुरानीकदावम् ।
शरच्चन्द्रवक्त्रं लसत्पद्मनेत्रं दुरावारपारं भजे राघवेशम् ।।७।।
सुराधीशनीलाभ्रनीलाङ्गकान्तिं विराधादिरक्षोवधाल्लोकशान्तिम् ।
किरीटादिशोभं पुरारातिलाभं भजे रामचन्द्रं रघूणामधीशम् ।।८।।
लसच्चन्द्रकोटिप्रकाशादिपीठे समासीनमेकं समाधाय सीताम् ।
स्फुरद्धेमवर्णां तडित्पुंजभासां भजे रामचन्द्रं निवृत्तार्तितन्द्रम् ।।९।।

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे युद्धकाण्डे इन्द्रकृतं रामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

रामरक्षास्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

ॐ अस्य श्री रामरक्षास्तोत्र मन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः,
श्री सीतारामचन्द्रो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, सीता शक्तिः,
श्रीमद्हनुमान कीलकम्, श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षा-
स्तोत्रजपे विनियोगः ।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानाङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ।।

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।।१।।
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ।।२।।
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ।।३।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देहम्प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः
स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं वादिनः ।
मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥५॥

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशो मायासमाच्छादनात्
सन्मात्रः करणोपसंहरणतो योऽभूत्सुषुप्तः पुमान् ।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥६॥

बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्वस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तःस्फुरन्तं सदा ।
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥७॥

विश्वम्पश्यति कार्यकारणतया स्वस्वामिसम्बन्धतः
शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः ।
स्वप्ने जाग्रति वा य एष पुरुषो मायापरिभ्रामित-
स्तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥८॥

भूरम्भांस्यनलोऽनिलोऽम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमा-
नित्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम् ।
नान्यत्किञ्चन विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभोस्-
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ ९॥

सर्वात्मत्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिंस्तवे
तेनास्य श्रवणात्तथार्थमननाद्ध्यानाच्च संकीर्तनात् ।
सर्वात्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
सिद्ध्येत्तत्पुनरष्टधा परिणतं चैश्वर्यमव्याहतम् ॥१०॥

श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ।

महागणेशपञ्चरत्नम्

श्रीगणेशाय नमः

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकं कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥१॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गणेश्वरं गजेश्वरं महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरंतरम् ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं दरेतरोदरं वरं वरेभ-वक्त्रमक्षरम् ।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ।।३।।
अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम् ।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ।।४।।
अचित्य-रूपमन्तहीनमन्तराय-कृन्तनं नितान्तकान्तदंतकान्तमन्तकान्तकात्मजम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां तमेकदन्तमेव संविचिन्तयामि सन्ततम् ।।५।।
महागणेश-पञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं प्रजल्पति प्रभातके हृदिस्मरन्गणेश्वरम् ।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ।।६।।

श्रीमदाद्यशङ्करभगवत्पादविरचितं गणेशपञ्चरत्नस्तोत्रम् ।

मङ्गलश्लोकाः

श्रीगणेशाय नमः

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।१।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।२।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।३।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।४।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।५।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।६।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरा ऽसुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।७।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ।।८।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ।।९।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान के०
ग्र०सं० 2831
भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर-प्रदेश संस्कृत-संस्थानम् के प्रमुख प्रकाशन

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१.	संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास प्रधान सम्पादक पद्मभूषण आचार्य श्री बलदेव उपाध्याय		
	वेद खण्ड (प्रथम)	सम्पादक प्रो. व्रजविहारी चौबे	३२०.००
	वेदाङ्ग खण्ड (द्वितीय)	सम्पादक प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय	३००.००
	आर्षकाव्य खण्ड (तृतीय)	सम्पादक प्रो. भोलाशंकर व्यास	४००.००
	काव्य खण्ड (चतुर्थ)	सम्पादक प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी	३००.००
	आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (सप्तम)	सम्पादक प्रो. जगन्नाथ पाठक	३६०.००
	काव्य-शास्त्र (अष्टम)	सम्पादक आचार्य करुणापति त्रिपाठी	३७५.००
	न्याय खण्ड (नवम्)	सम्पादक प्रो. गजानन शास्त्री मुसलगांवकर	२८०.००
	वेदान्त खण्ड (दशम)	सम्पादक प्रो. संगम लाल पाण्डेय	३००.००
	तन्त्रागम खण्ड (एकादश)	सम्पादक प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी	३००.००
	व्याकरण खण्ड (पञ्चम)	प्रो. गोपालदत्त पाण्डेय	३००.००
२.	स्तुतिमणि माला (प्रथम, द्वितीय भाग)	संपादक आचार्य करूणापति त्रिपाठी	४०.००
३.	दावानल	डॉ. श्रीनाथ हसूरकर	११३.००
४.	संस्कृत प्रभा	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	७०.००
५.	संक्षिप्त महाभारत (द्वितीय खण्ड)	संपादक एवं अनुवादक डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी	२२५.००
६.	कालिदास-ग्रन्थावली	सम्पादक-आचार्य सीताराम चतुर्वेदी	२००.००
७.	कविर्जयति-वाल्मीकिः	सम्पादक-डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव	१२०.००
८.	अद्वैत सिद्धिः (तीन भाग)	गुरु चन्द्रिका टीका	२८०.००
९.	तन्त्र समुच्चयः (दो भाग)शंकरप्रभृति विमार्शिनी आख्या विवरणाख्या-व्याख्या समेत		२००.००
१०.	पंचदशी अच्युतरायमोडक एवं रामकृष्ण-व्याख्या सहित		१५०.००
११.	सदुक्ति कर्णामृतम् (प्रथम भाग)	हिन्दी टीका-प्रो. ओम् प्रकाश पाण्डेय	१२०.००
१२.	श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (चार भाग) अनेक पूर्व व्याख्यान उद्धृत गोविन्दराजीय	श्री गोविन्दराजीय व्याख्या तिलक प्रभृति अनुक्त एवं पूर्व विषयों से समलंकृत	७४०.००
१३.	मन्त्ररामायण (हिन्दी टीका)	डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी	७५.००
१४.	धातुरूप-निदर्शनम्	पं. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री	५०.००
१५.	नैषधीय-चरितम् (दो भाग)	नारायणी एवं मल्लिनाथ टीका सहित	२४०.००
१६.	भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष गाथा	डॉ. सत्यदेव चौधरी	४०.००
१७.	कथामन्दाकिनी	डॉ. ओम प्रकाश ठाकुर	६०.००
१८.	बालकथा कौमुदी	सम्पादक-डॉ. विश्वास	५०.००
१९.	बाल वाटिका.	सम्पादक-डॉ. विश्वास	३०.००
२०.	पौरोहित्य कर्म-प्रशिक्षक	सम्पादक-डॉ. सच्चिदानन्द पाठक	१००.००
२१.	भारतीय संस्कृति की वैज्ञानिकता	सम्पादक-डॉ. उमारमण झा	१००.००
२२.	परिशीलनम् षाण्मासिकी संस्कृतानुसंधान पत्रिका		१०.००

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.